



उग्र प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 47 कुल पृष्ठ-8 18 से 24 दिसम्बर, 2025

दयानन्दाब्द 201

सृष्टि सम्वत् 1960853126

सम्वत् 2082

पौ. कृ-14

स्वामी दयानन्द पार्क, जीन्द में अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति में तथा आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सफलता पूर्वक हुआ सम्पन्न

सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने की



स्वामी दयानन्द पार्क, जीन्द, हरियाणा में अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति में तथा आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 14 दिसम्बर, 2025 (रविवार) को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विठ्ठलराव आर्य, पूर्व गन्ना मंत्री एवं वर्तमान विधायक स्वामी ओमवेश जी, कार्यक्रम के संयोजक एवं नशाबंदी संघर्ष समिति के प्रधान स्वामी रामवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्या युवती परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन प्रवेश आर्या, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री रणवीर सिंह लोहान, जिला डेयरी एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री रमेश दिल्ली, श्री वजीर सिंह ढांडा, श्री इन्दर सिंह आर्य पूर्व एस.डी.एम., श्री देवेन्द्र सहारन, श्री दलवीर सिंह आर्य वरिष्ठ उपप्रधान आर्य समाज नागरी गेट हिसार, श्री रणधीर सिंह रेड्डी एडवोकेट, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क, स्वामी ब्रह्मानन्द-राखीगढ़ी, स्वामी मुक्तिवेश-टिटौली, श्री सुनील शास्त्री आदि की भी गरिमामयी उपस्थिति एवं उद्बोधन से कार्यक्रम बेहद प्रभावशाली रहा।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती केवल एक महान संत या समाज सुधारक ही नहीं थे, बल्कि वे आधुनिक भारत की चेतना के शिल्पकार भी थे। महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती वर्ष का यह पावन अवसर हमें उनके विचारों, आदर्शों और राष्ट्र के प्रति उनके



अद्वितीय योगदान को आत्मसात करने की प्रेरणा देता है।

स्वामी जी ने कहा कि आज का युवा यदि राष्ट्र निर्माण में अपनी सशक्त भूमिका निभाना चाहता है, तो उसे महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया, अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों और गुलामी की मानसिकता के विरुद्ध संघर्ष किया तथा स्वराज्य और स्वाभिमान की भावना को जन-जन तक पहुंचाया। स्वतंत्रता आंदोलन में आर्य समाज द्वारा निभाई गई भूमिका युवाओं के लिए साहस, त्याग और देशभक्ति का जीवंत उदाहरण है।

स्वामी जी ने केंद्र सरकार से यह मांग रखी कि दिल्ली में महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से एक भव्य अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय की स्थापना की जाए। इस संग्रहालय में स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज और उसके महान राष्ट्रभक्तों के योगदान को आधुनिक तकनीक के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया जाना चाहिए। इससे न केवल देशवासियों को अपने गौरवशाली इतिहास का बोध होगा, बल्कि युवा पीढ़ी भी राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित होगी। उन्होंने कहा कि ऐसा संग्रहालय युवाओं के

लिए ज्ञान, प्रेरणा और आत्मगौरव का केंद्र बनेगा। जब युवा अपने महापुरुषों के संघर्ष, विचार और बलिदान को जानेंगे, तब उनके भीतर राष्ट्र के प्रति समर्पण और जिम्मेदारी की भावना स्वतः जागृत होगी। स्वामी जी ने युवाओं से आह्वान किया कि वे महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाकर एक सशक्त, स्वावलंबी और जागरूक भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं।

स्वामी जी ने जेवर (अलीगढ़) में बन रहे अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का नाम 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' के नाम पर रखने की भी मांग की।

एक प्रस्ताव के द्वारा सरकार से मांग की गई कि — पूर्ण नशाबन्दी की राष्ट्रीय नीति घोषित हो, गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये, सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया एवं टेलीविजन आदि पर प्रस्तुत की जा रही अश्लील एवं अनैतिक सामग्री पर प्रतिबन्ध लगाया जाये, लिव-इन-रिलेशनशिप के नाम पर समाज के ढांचे को विखण्डित करने वाली प्रवृत्ति को अवैध घोषित किया जाये।

हैदराबाद से पधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रो. विठ्ठलराव आर्य जी ने कहा कि समाज को अंधविश्वास, पाखण्ड और अपराधी मानसिकता से मुक्त करना आवश्यक है। आर्य समाज "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना के साथ कार्य करते हुए समरस एवं सशक्त समाज के निर्माण में सतत सक्रिय है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आज समाज को सबसे अधिक आवश्यकता युवाओं के सशक्त निर्माण की है, किंतु दुर्भाग्यवश इस दिशा में अपेक्षित प्रयास नहीं हो पा रहे हैं। उन्होंने बताया कि

शेष पृष्ठ 6 पर



सम्पादक - प्रो. विठ्ठलराव आर्य

महान् राष्ट्रभक्त लाला लाजपतराय

—डॉ० भाई महावीर

इस युग में देश की श्रद्धा-विभोर जनता ने दो महामानवों को पंजाब केसरी की उपाधि से अलंकृत किया है। उनमें से प्रथम थे महाराजा रणजीत सिंह। 18 दिसम्बर 1845 को जन्म हुआ मुन्शी राधा किशन का जिनकी प्रथम सन्तान के रूप में पंजाब को अपना दूसरा केसरी प्राप्त हुआ। अपने देश व धर्म के लिए जिस प्रकार का स्वाभिमान, अपने हिन्दूपन के लिए जितनी तड़प और उसका अपमान अथवा हानि होते देखकर जितनी तीव्र प्रतिक्रिया लाला लाजपतराय में जीवन भर होती रही, उसे देखकर यह आश्चर्यजनक लगता है कि उनके पिता अपनी आधी उम्र तक केवल नाम के हिन्दू थे- नहीं तो रमजान के दिनों में रोजे रखने में, हर रोज पांच बार नमाज पढ़ने में और कुरान आदि मुस्लिम ग्रन्थों के पारायण में शायद ही कोई मुसलमान उनसे बाजी ले पाता। यह उनके उस्ताद का प्रभाव था, जिसके परिणाम स्वरूप उनके अनेक सहपाठी विधिवत् इस्लाम स्वीकार कर चुके थे।

मुस्लिम संस्कृति में पोषित पिता :- मुन्शी राधा किशन कलमा पढ़ कर बाकायदा मुसलमान नहीं बने इसका श्रेय बहुत अंश में उनकी पत्नी गुलाब देवी को ही है। मुन्शी जी ने अपने मुसलमान मित्रों को घर पर बुलाकर उनकी इच्छानुसार कई बार मांसादि का भोजन करवाया और कभी-कभी उनके यहां से पका हुआ भोजन लाकर खाया, यह सब उनके जैन मत, अग्रवाल वैश्य के लिए कितना सद्गुण था यह तो अलग प्रश्न है। किन्तु इसने उस साध्वी नारी के जीवन को अत्यन्त दुःखित बना रखा था और कई-कई दिन तक उसने गम के सिवा कुछ न खाकर और आँसू पीकर काटे थे। गोद के शिशु पर उसने अपनी ममता भी उँडेली और उसी पर अपनी सारी आशाएँ भी केन्द्रित कीं। परन्तु सारी व्यथा सहकर भी कभी उसने उन्हें छोड़ जाने की कल्पना को पास तक नहीं आने दिया।

इस्लाम की दीक्षा ? :- एक बार तो मुन्शी जी ने इस्लाम की दीक्षा लेने का फैसला कर ही डाला और पत्नी व बालक को लेकर मस्जिद में जा पहुँचे। परन्तु सती नारी के अन्तर्मन की पीड़ा उसकी आँखों की मूक वाणी से कुछ ऐसी प्रकट हुई कि बाहर सीढ़ियों पर ही बाल लाजपत चीख कर रोने लग पड़ा। बस, इस रुदन से मुन्शी राधा किशन के दुर्बल मन का अस्थिर निश्चय ढगमगा गया और वे लौट आए। आगे चलकर लाला जी ने शुद्धि का जो कार्य करना था उसका भी श्रीगणेश, जैसे साक्षात् अपने पिता से शैशवावस्था में ही उन्होंने कर दिया। परन्तु माता के दुःख और पिता के व्यामोह को दूर करने में अभी उन्हें बहुत देर लगने वाली थी।

विद्यार्थी जीवन :- लाला लाजपत राय को पढ़ने की लगन पिता से विरासत में मिली परन्तु गरीबी के कारण उनका विधिवत् शिक्षण न हो पाया। जहाँ-जहाँ उनके पिता अध्यापक रहे प्रायः उन्हीं स्कूलों में वे पढ़े। शिक्षा काल में ही वे दो-तीन बार लाहौर आए तो उन्हें दो साथी मिले- गुरुदत्त और हंसराज। कुछ समय पूर्व ही वहाँ आर्य समाज की स्थापना हो चुकी थी और वे दोनों उस रंग में रंगे हुए थे। इस मैत्री से और इसके द्वारा आर्य समाज के जो संस्कार लाजपतराय को मिले उनसे उन्हें देश जाति की सेवा का संकल्प प्राप्त हुआ। हंसराज में जो सरल सेवा की वृत्ति थी, गुरुदत्त में जो बौद्धिक प्रतिभा थी और लाजपत राय में जो उग्र देश-प्रेम और करुणा का सागर था उनके मिश्रण से यह त्रिमूर्ति आर्य समाज की नींव बन गई। गुरुदत्त तो अकाल मृत्यु के ग्रास बने परन्तु लाला लाजपत राय और महात्मा हंसराज की मैत्री आजीवन रही।

समाज सेवा :- लाजपतराय अत्यन्त भावुक प्रकृति के थे। स्वभाव की भावना प्रधानता के कारण उन्हें जहाँ कहीं कष्ट दिखाई पड़ा- चाहे वह राजपूताना का अकाल था, चाहे कांगड़ा का भूकम्प, वहीं पहुँचे और जन-जन के कष्ट को कम करने में जुटे। पैसा उन्होंने कमाया पर उसमें मन न लगाया, उसे जीवन पूर्ति का प्रमुख कार्य नहीं बनाया। यही नहीं, उन्होंने अन्याय के विरुद्ध सदा आवाज उठाई। कौन कितना बड़ा है इसकी परवाह किए बगैर उन्होंने अन्यायपूर्ण बात का विरोध किया।

मुस्लिम कांग्रेस-अध्यक्ष को उत्तर :- ऐसा ही एक प्रसंग था जब 1923

में काकीनाडा कांग्रेस के अध्यक्षपद से मौलाना मुहम्मद अली ने कहा था कि हिन्दू अपनी अछूत जाति की समस्या हल नहीं कर सकते इसलिए क्यों न उन्हें आधा-आधा बाँट लिया जाये, आधे अछूत मुसलमानों को दे दिए जाएँ। यह तर्क जितना लचर और निर्लज्ज था उतना ही हिन्दू भावना पर चोट करने वाला भी था। बाकी लोग भले ही इस अपमान को पी सकें परन्तु लाला जी की प्रतिक्रिया बहुत तीव्र थी- यह हमारा घरेलू प्रश्न है किसी और के दखल की इसमें जरूरत नहीं। हिन्दू ही छुआछूत की समस्या का हल करेंगे। फिर अछूत जातियाँ क्या दोर पशु हैं जिनके इस तरह बंटवारे की बात की जा रही है?

हिन्दू भाव उनके हृदय में क्यों रहता था? इसका उत्तर उन्हीं के शब्दों में यह है- ‘‘यदि स्वराज्य लेने के लिए हमारी आतुरता हमें धर्म बदलने की प्रेरणा दे और हम ईसाई बनें तो यह एक प्रकार की स्वतन्त्रता अंग्रेज हमें देंगे। परन्तु स्वराज्य तो सच्चे अर्थों में तभी होगा जब हम अपने स्वरूप में स्थिर रह कर राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करें। हमारा स्वरूप है हमारा धर्म, हमारी संस्कृति और हमारी अपनी देशगत, जातिगत भावनाएँ। उन्हें त्याग कर मिलने वाला स्वराज्य, स्वराज्य नहीं है।’’

जब वे कांग्रेस में रहे तो ऐसे उत्साह के साथ जो सरल व सच्चे हृदयों में ही हो सकता है और जो हर कदम पर हानि लाभ का विचार करने का अभ्यस्त नहीं होता। वह ‘‘आग से खेलता है तो झुलस जाने के लिए तैयार भी रहता है।’’ और इसमें कोई दो मत नहीं कि ब्रिटिश सरकार के साथ संघर्ष में इन प्रश्नों पर उलझने के अवसर उनके लिए अनेक आए।

राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण से लाला लाजपत राय के जीवन का दूसरा चरण प्रारम्भ होता है। कांग्रेस की स्थापना के समय से ही अलीगढ़ के सर सैयद अहमद ने मुसलमानों को उससे अलग रखने का झंडा उठा लिया था। उनके लेखों के उत्तर में अनेक पत्र उन्हींके पुराने विचारों के हवाले से छपे। चाहे वे पत्र गुमनाम थे परन्तु अधिक दिनतक यह छिपा न रहा कि वे किस लेखनी का प्रसाद थे। उनके कारण लाला जी की जो प्रसिद्धि हुई उसका परिणाम यह था कि कांग्रेस के संस्थापक श्री ह्यूम और पंडित मालवीय आदि ने प्रयाग कांग्रेस के समय उनका स्वयं स्टेशन पर स्वागत किया और श्री ह्यूम ने उन चिट्ठियों का स्वयं सम्पादन करके पुस्तकार में प्रकाशित किया। लाला जी संभवतः पहले व्यक्ति थे जिन्होंने तब तक अंग्रेजी में काम करने वाली कांग्रेस के अधिवेशन में हिन्दी में भाषण दिया। उनकी असाधारण वक्तृत्व शक्ति ने उन्हें शीघ्र ही संस्था की चोटी के नेताओं की श्रेणी में ला खड़ा किया।

बंग-भंग आन्दोलन में :- और तब 1805 में आया बंग-भंग का वह निर्णय जिसके विरोध में ‘लाल-बाल-पाल’ की त्रिमूर्ति गरम दल के रूप में देश के उद्गारों का प्रतिनिधित्व करने लगी। प्रिंस आफ वेल्स के स्वागत के प्रश्न पर बनारस अधिवेशन में कांग्रेस के नरम और गरम दलों में टक्कर हो गई। इसके बाद जागृति की जो लहर देश भर में चली वह मीठे-मीठे भाषणों, सरकार के नाम भेजे गए आवेदन पत्रों और ‘गॉड सेव दी किंग’ के गायन की मर्यादाओं को ध्वस्त करके ‘स्वराज्य, स्वदेशी और बहिष्कार’ केमंत्रों के रूप में चारों दिशाओं में व्यापक हो गई। इस नए जागरण के निर्माता यदि महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक और इनका ‘केसरी’ थे तो पंजाब में लाजपत और उनका ‘पंजाबी’ और बंगाल में विपिन चन्द्र पाल तथा अरविन्द घोष के सम्पादन में चलने वाला ‘वन्देमातरम्’। लाला जी की वाणी में ओज तो था ही, अब तो वह आग बरसाने लगी। नौकरशाही इस ताक में रहने लगी कि उनको किस प्रकार रास्ते से हटाए।

तभी पंजाब में नहरी आबादियों के कानून के विरुद्ध आन्दोलन चला। सही या गलत यह धारणा कृषकों में घर कर गई कि अंग्रेज कानून द्वारा उत्तराधिकार के नियम को बदलने की तैयारी में है। लाला जी आन्दोलन के समर्थक तो थे, पर उसमें सक्रिय नहीं हुए। किन्तु न चाहते हुए भी वे खिंच कर उसमें उलझ ही गए। लायलपुर की एक सभा में वे अध्यक्ष बनाए गए। वहीं भगत सिंह के चाचा अजीत सिंहने भाषण दिया जो काफी विद्रोहपूर्ण था।

नरम और गरम दल :- अजीत सिंह और लाजपतराय दोनों को 1818 के पुराने रेगुलेशन के अधीन निर्वासन का दण्ड दिया गया। 6 महीने की कैद के बाद लाला जी मांडले जेल से रिहा होकर लौटे। इस कैद ने उनकी कीर्ति को दिग्दिगन्त तक फैला दिया। उसके शीघ्र बाद ही सूरत कांग्रेस का अधिवेशन था। जनता के हृदयों पर तो लाला जी का शासन था और तिलक भी चाहते थे उन्हीं को अध्यक्ष बनाना परन्तु लाला जी दलबन्दी में पड़ना न चाहते थे। अधिवेशन तो मार पिटाई और उछलते जूतों की गड़बड़ में समाप्त हो गया। साथ ही यह स्पष्ट हो गया कि नरम और गरम दल वालों के रास्ते बिलकुल फट गए हैं। लालाजी ने कांग्रेस को छोड़ा तो नहीं पर विरक्ति उन्हें अवश्य हो गई- कांग्रेस से ही नहीं, राजनीति से। कुछ काल के लिए उन्होंने फिर आर्य समाज के क्षेत्र को अपना लिया। 1914 में वे इंग्लैण्ड चले गए। वे वहीं थे जब महायुद्ध शुरू हो गया।

युद्ध नीति :- अब भारतीयों और कांग्रेस के सामने यह प्रश्न था कि उनकी नीति युद्ध के बारे में क्या हों। गांधी जी बिना किसी शर्त के सरकार की सहायता करने के पक्ष में थे। लालाजी का दृष्टि-कोण क्या था? ‘‘मैं युद्ध में अंग्रेजों की सहायता के विरोध का आन्दोलन चलाने के पक्ष में तो नहीं था। मैं तो उनकी युद्ध नीति का समर्थन करने का भी उद्यत था। यदि उससे हमारे युवकों को भी सेना में प्रतिष्ठित पदों की प्राप्ति, शस्त्रास्त्र के प्रयोग तथा युद्धकला में निपुणता प्राप्त करने का अवसर मिल जाता। सरकार ने ये दोनों बातें अस्वीकार कर दीं।.... इस दशा में मैं बिना किसी शर्त के युद्ध में भर्ती होने को तैयार नहीं था। परन्तु मेरे देश के शिक्षित नेताओं का मत इससे भिन्न था। लालाजी व तिलक दोनों का दृष्टि-कोण एक ही था जो कि गांधी जी की तुलना में यथार्थवादी भी था- और जो कम से कम आज तो स्वीकार किया जा सकता है- अधिक दूरदर्शिता-पूर्ण भी! इसी दूरदर्शिता ने लाला जी को, देश लौटने, कहीं नजरबन्द हो जाने के स्थान पर बाहर रहने के लिए प्रेरित किया। वे फरवरी 1920 तक नहीं लौटे।

निरंकुश लाठियों :- लौटते तो ब्रेडला हाल के पीछे मैदान में उनका पहला भाषण हुआ। उसमें उनकी अंग्रेजों को चुनौती थी- ‘‘खिचड़ी पक रही है। न खाएंगे न खाने देंगे। न सोएंगे, न सोने देंगे! मंजिल पर पहुँचे बिना चैन न लेंगे।’’ और सच में वह महापुरुष न सोया ना उसने प्रतिपक्षी को सोने दिया, जब तक निरंकुश शासकों की लाठियों ने उसे सदा की नींद न सुला दिया। उन लाठियों के विषय में लाला जी के शब्द किसी भी क्रान्ति की चिनगारी से कम ज्वलन्त नहीं थे-

‘‘हम पर की गई एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में एक-एक कील सिद्ध होगी’’ उन्होंने यह भी कहा कि यदि मैं मर गया और जिन नवयुवकों को मैंने काबू में रखा हुआ था, उन्होंने (शांतिपूर्ण उपायों से) अन्य मार्ग ग्रहण करने का निश्चय किया तो मेरी आत्मा उनके कार्य को आशीर्वाद देगी!’’ अपने निर्वाण समय के निकट, मद्रास समुद्र तट पर हुई एक विशाल सभा में जो कुछ लाला जी ने कहा वह उनके जीवन भर के भावों को अत्यन्त सुन्दर ढंग से प्रकट करता है- ‘‘अब जब जीवन की संध्या होते देखता हूँ और सिंहावलोकन करता हूँ तो खेद होता है कि जिस माता की कोख से जन्मा, जिसकी गोद को मलमूत्र से अपवित्र किया, जिसका स्तन पिया वह माता बन्धन में ही है और मेरे जीवन के सूर्य का अस्ताचल की ओर प्रयाण तीव्रगति से हो चला है। माता के बंधन तोड़ने के लिए मैंने कुछ नहीं किया, इसी की तीव्र वेदना मुझे व्यथित करती रहती है।’’

आज जब माता के बन्धन टूट चुके हैं, लाला लाजपतराय और उनके अन्य साथियों के आदर्श कहां तक पूरे हों रहे हैं? आज की राजनीति की ऊहापोह में मन खोजता है ऐसे साहसी व उदात्त चरित्रों को जिन्होंने आदर्शवाद से प्रेरित होकर जीवन को यज्ञ बनाया हो, जिनके श्वासों में देशप्रेम हो, जिनकी धड़कनों में राष्ट्रकी व्यथा हो। कहीं हैं ऐसे राजनीतिज्ञ जो स्वयं को उन महापुरुषोंके उत्तराधिकारी कह सकें जिन्होंने पत्थर बनकर स्वातन्त्र्य मंदिर की नींव को भरा था?

आर्य समाज सैक्टर-3, रेवाड़ी का वार्षिकोत्सव दिनांक 5, 6 व 7 दिसम्बर, 2025 को सफलता के साथ हुआ सम्पन्न सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी व राजस्थान सभा के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट भी हुए सम्मिलित

आर्य समाज सैक्टर-3, रेवाड़ी का वार्षिकोत्सव 5, 6 व 7 दिसम्बर, 2025 को सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। सम्मेलन में 6 दिसम्बर, 2025 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी, स्वामी समर्पणानन्द जी-दड़ौली आदि के अतिरिक्त भारजीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के प्रधान श्री सहदेव बेधड़क, श्रीमती संगीता आर्या व श्री सुन्दर लाल आर्य आदि भजनोपदेशक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में मंच का संचालन श्री रामकृष्ण शास्त्री ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला तथा अध्यक्षता वेद प्रचार मण्डल रेवाड़ी के प्रधान स्वामी यशदेव जी ने की। व्यवस्था का मुख्य दायित्व आर्य समाज के प्रधान श्री बुद्धदेव यादव एडवोकेट व उनके अन्य सहयोगी श्री ओम प्रकाश बागड़ी-उपप्रधान, श्री



भगवान-मंत्री, श्री ओम प्रकाश कालड़ा-कोषाध्यक्ष, श्रीमती शकुन्तला-महिमा प्रभारी, श्रीमती पुष्पा यादव-सहप्रभारी, श्रीमती सरोज यादव-प्रवक्ता आदि ने बड़ी कुशलता के साथ की। कार्यक्रम में श्री इन्दर सिंह आर्य पूर्व एस.डी.एम. भिवानी, श्री बाबूलाल आर्य-जूई, श्री अशोक आर्य-मंत्री आर्य समाज छोटी बीकानेर, श्री देशराज आर्य-संरक्षक आर्य समाज सब्जी मण्डी, सेवा निवृत्त प्रिंसिपल आचार्य राजकुमार जी भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ और उन्होंने आर्य समाज की उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। इसी प्रकार स्वामी आदित्यवेश जी ने भी अपने ओजस्वी व्याख्यान से उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित किया। श्री सहदेव बेधड़क और बहन संगीता आर्या के भजनों का प्रभावशाली कार्यक्रम रहा।

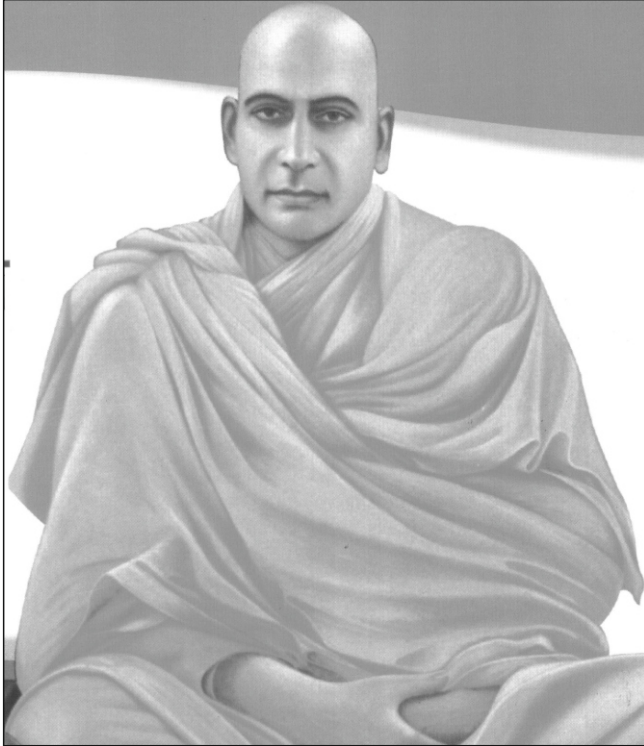


जीवन को यज्ञमय बनाओ

— स्वामी श्रद्धानन्द

मनुष्य के प्राकृतिक भाग को भूख लगती है, उसकी निवृत्ति के लिये तरह-तरह के अच्छे से अच्छे फल और अन्न परमात्मा की ओर से दिये गए हैं। प्यास भी प्रकृति का एक भाग है उसकी निवृत्ति के लिए चारों ओर शीतल जल बह रहे हैं। क्या मनुष्य को कहने की आवश्यकता है कि भूख और प्यास के बुझने में नागा मत करो? और जब कभी आलस्य या प्रमाद से इन दैनिक कर्तव्यों को पूरा करने में मनुष्य ढील करता है तब शरीर और अच्छे से अच्छा स्वास्थ्य रखने वाला मनुष्य भी इन दैनिक कर्तव्यों के पूरा करने में अनियमता करके उसके दण्ड से नहीं बच सकता। यही अवस्था मन और आत्मा की है। दैनिक अग्निहोत्र की आज्ञा जहाँ अपवित्र वायु को स्वच्छ करने के लिये है, वहाँ उसकी जड़ में यह विचार भी काम करता है कि मनुष्य वायु को जिस प्रकार अस्वच्छ करते हैं उसी प्रकार प्रयत्न से उस वायु की अपवित्रता को दूर करना भी उचित है। किन्तु साथ ही इसके, यह दैनिक कर्तव्य उन रोजाना पापों की निवृत्ति के लिये भी है जो कि न जानने की अवस्था में प्रत्येक मनुष्य से प्रतिदिन हो जाते हैं। इस कर्म से बुद्धि निर्मल होकर मन की अवस्था पवित्र हो जाती है।

वैदिक आदर्श के अनुसार सबसे बढ़कर मनुष्य का दैनिक कर्तव्य ब्रह्म यज्ञ है। दूसरे महायज्ञ केवल इसके सहायक हैं। मुख्य दैनिक कर्तव्य यही है कि जिस तरह मनुष्य के भौतिक शरीर की भूख लगती है इसी प्रकार आत्मिक शरीर को आत्मिक भूख लगती है। अगर उस दैनिक भूख को प्रतिदिन निवृत्त न किया जाये तो मनुष्य की आत्मिक अवस्था भी वैसे ही गिर जाती है जैसे कि भूख लगने पर भौतिक शरीर की अवस्था होती है। इस ब्रह्म यज्ञ अर्थात् वेद रूपी ज्ञान की खुराक से आत्मा की तृप्ति नित्य करनी चाहिए। प्रत्येक काम में अनध्याय संभव है किन्तु क्या शरीर के दूसरे दैनिक कर्तव्यों में भी कभी नागा हो सकता है? रोग की अवस्था ने सम्भव है कि बनावटी जीवन व्यतीत करने वाले हम मनुष्यों को खुराक बदलने की आवश्यकता हो परन्तु कोई भी योग्य वैद्य खुराक को बन्द नहीं कर सकता। योग्य वैद्य वही समझा जाता है जो कि रोगी के शारीरिक बल को स्थिर रखने के यत्न से किसी न किसी तरह उसमें खुराक पहुँचाता रहे। इसी तरह से आत्मिक रोग लग जाने पर ब्रह्म यज्ञ के कर्तव्य से मनुष्य किसी तरह मुक्त नहीं हो सकता। इसलिये प्रत्येक आस्तिक पुरुष का कर्तव्य है कि नित्य प्रति प्रातः और सायं परमात्मा की उपासना के लिये ब्रह्म के ज्ञान की आहुतियों से आत्मिक यज्ञ किया करे। जब शारीरिक रोग होने पर शरीर को खुराक पहुँचाने से कोई भी मनुष्य नहीं रुकता तो आत्मिक रोग की अवस्था में आत्मिक खुराक से दूर भागना क्या आश्चर्य जनक नहीं है? किन्तु यह अवस्था इसलिये होती है कि हम सब अपनी वास्तविक अवस्था को त्यागकर बनावटी जीवन बिता रहे हैं। एक बच्चा जब बीमार होता है तो इधर उधर



भागने के स्थान पर माता की गोद की ओर हाथ पसारता है और जब माता उसे गोद में ले लेती है तो वह विश्वास के साथ अपने रोग को भूल जाता है। जगत् माता से बढ़कर हमारे साथ किस सांसारिक माता का प्रेम हो सकता है? जगत् माता की गोद हमारे लिए हर समय खुली है। फिर शोक हम शारीरिक रोग का बहाना करके उस प्रेम भरी गोद में जाने से संकोच करते हैं और अपने लिए हजारों तरह के क्लेश मोल ले लेते हैं। जब शरीर रोग ग्रस्त होता है तो योग्य वैद्य खुराक बन्द नहीं करता बल्कि बोझल भोजन को बन्द करके हल्की खुराक रोगी के लिए निश्चित करता है। किन्तु हम लोग कैसे मूर्ख हैं कि उस समय जब कि हल्की से हल्की खुराक की आवश्यकता होती है, भोजन को बिल्कुल जवाब दे बैठते हैं। जो रोगी नित्यप्रति शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने के योग्य है उसका यह बहाना कि बीमारी के कारण से परमात्मा की उपासना नहीं कर सकता, कैसा व्यर्थ है। मैंने हरि भक्तों के अन्तिम क्षण देखे और उनके विश्वास को देख कर अजब असर पैदा हुआ। ब्रह्मज्ञानी ऋषि कहते हैं कि न शक्यते वर्णयितु तदा गिरा स्वयं तदन्तः करणेन गृह्यते। उसको जिह्वा से वर्णन नहीं कर सकते। वह केवल

अन्तःकरण से ग्रहण करने के योग्य है तब उस आनन्द के लिये निर्बल से निर्बल शारीरिक अवस्था बाधक नहीं हो सकती। क्या हम नित्यप्रति नहीं देखते कि बरसों का कमाया हुआ शरीर दो दिन उचित खुराक न मिलने से गिर जाता है। तब क्या सन्देह है कि बरसों की आत्मिक कमाई एक दिन की असावधानी से नष्ट हो सकती है। यही कारण है कि दोनों समय आत्मिक सत्संग के लिए आज्ञा की गई है और उसमें अनध्याय को कदाचित् स्थान नहीं दिया गया है। जो मनुष्य परमात्मा की नित्यप्रति उपासना स (ज्यादा काम या रोग के बहाने पर) बचने का यत्न करते हैं वे अपने लिए विशेषतः बीमारी को सामग्री मोल लेते हैं।

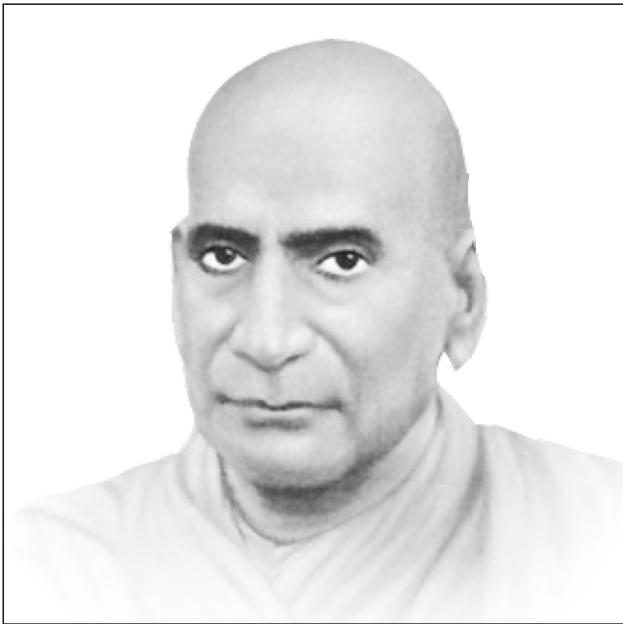
प्रिय पाठकगण ! संसार चक्र दिन-रात चल रहा है, इसके अन्दर उठरने की गुंजाइश नहीं है। हर पल हमें नीचे या ऊपर ले जाने के लिए तैयार खड़ा है। अगर हम ऊपर की ओर न चलेंगे तो निश्चय से नीचे गिरना होगा। नीचे चलने के लिए किसी परिश्रम की आवश्यकता नहीं होती। नीचे ले जाने के लिये हमारे चारों ओर सामग्री दिखाई देती है। परन्तु ऊपर चलने के लिए विशेष पुरुषार्थ की आवश्यकता है। पर्वत के नीचे जाने के लिए सिवाय एक बार पैर नीचे की ओर डाल लेने के क्या किसी और गति की आवश्यकता होती है? परन्तु पहाड़ पर चढ़ने के लिए बड़ी भारी हिम्मत की आवश्यकता है। हाँ, जब किसी हद तक ऊपर चढ़ जावें और अभ्यास हो जावे तो फिर आप से आप पैर ऊपर की ओर उठता है। ज्यों ज्यों अभ्यास से बल और उत्साह बढ़ते जाते हैं त्यों त्यों ऊपर के सुन्दर दृश्य मनुष्य को अपनी ओर खींचते हैं। परन्तु क्या ऊपर चलते हुए, मनुष्य एक घण्टे के लिए भी रुक सकता है? एक बार ऊपर की ओर पग उठाओ, जब तक पहाड़ की चोटी पर न पहुँचे तब तक निश्चित नहीं बैठ सकते। इसी तरह आत्मिक पर्वत की यात्रा में भी बीच में रुकने का अर्थ मृत्यु है। जिस प्रकार पर्वत के मार्ग में रुकते ही और नीचे नज़र करते ही चक्कर आता है और घबराया हुआ मनुष्य हजारों फुट नीचे गिर कर चकना चूर हो जाता है इसी प्रकार आत्मिक उन्नति के शिखर पर चलते हुये जिज्ञासु की अवस्था होती है। प्यारे मित्रो ! इस विकट तथापि आवश्यक मार्ग पर चलते हुए उठरने के विचार को भुला दो, जिससे कि बिना रोक टोक शिखर पर पहुँच कर तुम, अमर जीवन को पा सको।

शब्दार्थ — (नैत्यकै) दैनिक कर्तव्य की पूर्ति में (अनध्याः) छुट्टी, मुआफी (नास्तिक) नहीं है (हि) क्योंकि (तत्) उसे (ब्रह्मसत्त्रम्) ब्रह्मयज्ञ (स्मृतम्) कहा है। (अनध्यायवषट्कृतम्) अनध्याय में भी स्वाहा किया हुआ और (ब्रह्माहुतिहुतम्) वेद मन्त्रों से उच्चारित आहुतियों से आहुत यह ब्रह्मयज्ञ (पुण्यम्) पुण्यप्रद होता है।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का संदेश

- स्व० रघुवीरसिंह शास्त्री, पूर्व मंत्री सार्वदेशिक सभा

२३ दिसम्बर आर्यसमाज की गौरवपूर्ण विभूति श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान-दिवस है जो सारे आर्य जगत् में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। अपने आचार्य तथा प्रवर्तक के पश्चात् आर्यसमाज के संघटन एवं प्रसार की दृष्टि से स्वामी श्रद्धानन्द जी का यशस्वी नाम आर्यसमाज के इतिहास में प्रायः सर्वप्रथम स्थान रखता है। उनका विशाल व्यक्तित्व, दिव्य कार्यक्षमता, अनुकरणीय त्याग तथा साहसपूर्ण नेतृत्व सभी कुछ हमारे लिए ऐसा आदर्श रहा जिससे युगों तक हमें प्रेरणा तथा स्फूर्ति मिलती रहेगी। आचार्य दयानन्द विद्युत थी तो उनका शिष्य श्रद्धानन्द मानो एक विशाल यन्त्र था जो उससे संचालित हो रहा था। महर्षि के पश्चात् उनके मनोरथों को कार्यान्वित करने का उन्होंने बीड़ा उठाया। शिक्षा, समाजसुधार, देश की स्वाधीनता का आन्दोलन आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने मूर्त प्राप्ति का रूप धारण करके बहुत विपुल अभियान किये और सफलता ने उनके चरण चूमे। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल काँगड़ी जैसी संस्था उनकी क्रान्तिकारिणी क्षमता एवं प्रतिभा का सुंदर प्रमाण है। इस प्रयास के द्वारा गंगा के तट पर ही बैठ कर उन्होंने युग गंगा के प्रवाह को बदलने का सफल प्रयोग किया। छूआछूत दूर करने के लिये सक्रिय पग उठाने के लिए जब महात्मा गान्धी जी तक अपेक्षित साहस न दिखा सके तो स्वामी जी ने बहुत व्यापक स्तर पर इस बुराई के उन्मूलन के लिए तीव्र आन्दोलन चलाया। पीछे चलकर यद्यपि महात्मा गान्धी ने भी इसी आन्दोलन को अपने कार्यक्रम का मुख्य अंग बनाया परन्तु आर्यसमाज के आन्दोलन से महात्मा जी के आन्दोलन में यह मौलिक अन्तर रहा कि आर्यसमाज का आन्दोलन मानवीय भावनाओं पर ही आधारित था जबकि कांग्रेस के आन्दोलन के पीछे राजनैतिक स्वार्थ निहित थे। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि आर्यसमाज के आन्दोलन का स्तर ऊँचा रहा। आर्य समाज ने अछूतों को गले लगाया केवल धार्मिक श्रद्धा के वशीभूत होकर और कांग्रेस ने उन्हें अपनाया तो उन्हें राजनैतिक सत्ता प्राप्ति का साधन बनाया। आर्यसमाज ने अछूतों को तथाकथित सवर्णों के साथ आत्मसात् किया। अनेकों व्यक्ति इस वर्ग से आर्यसमाज के कार्यकर्ता तथा प्रचारक बने और अन्य उपदेशकों की भाँति ही पंडित आदि शब्दों के सम्मान का उपभोग करते रहे। दूसरी ओर महात्मा जी ने उन्हें हरिजन नाम देकर पृथक् जाति या वर्ग के रूप में बनाये रखा। इससे कांग्रेस को तो संस्था के रूप में राजनैतिक लाभ अवश्य मिला, परन्तु वर्गीय पार्थक्य के गर्त से बाहर निकल



कर विशाल समाज में एकाकार होने की इस वर्ग की आकांक्षाएँ बहुत सीमा तक धूमिल हो गईं। मानो औषध ने एक रोग को तो शान्त किया, परन्तु दूसरा रोग उभाड़ दिया। स्वामी श्रद्धानन्द की सरणि यदि उसी समय पकड़ी होती तो समस्या का यह नया विकराल रूप न बना होता।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि आंदोलन को भी जन्म दिया। यह आन्दोलन न केवल धार्मिक था, अपितु इसके पीछे राष्ट्रीय एकता की दूरदर्शिता भी काम कर रही थी। स्पष्ट था कि मुस्लिम तथा ईसाई मतों के प्रचार के नाम पर देश में राष्ट्रियता विरोधी तत्त्व तथा भावनाएँ पनप रही थीं। अंग्रेज शासक इन्हें अपने साम्राज्यवादी प्रयोजनों की सिद्धि के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। दूसरी ओर भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के नेता अपनी आरम्भिक दुर्बलताओं के कारण इन आंदोलनों के आगे झुकने में ही कल्याण समझते थे परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जैसा महारथी किसी लौकिक शक्ति का मुँह देखकर अपने आत्मा की पुकार को दबाने वाला न था। उन्होंने

तथाकथित देशभक्त लोगों का रोष एवं क्षोभ मोल लेकर भी शुद्धि आन्दोलन को तीव्र किया। हजारों की संख्या में मुस्लिम व ईसाई बने लोगों को पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित कर वैदिक संस्कृति का संजीवनी-पान शुद्धि आन्दोलन के माध्यम से कराया। उनका मानना था कि धर्मांतरण से मुस्लिम व ईसाई साम्प्रदायिकता को बल मिलेगा और धर्मांतरित होने वाले लोग साम्प्रदायिक राजनीति से ग्रसित होकर राष्ट्र की मुख्यधारा से विलग होकर स्वाधीनता संघर्ष में व्यवधान उत्पन्न करेंगे। मुस्लिम साम्प्रदायिकता मुस्लिम लीग के माध्यम से जो मांगे राष्ट्रीय मंच पर रख रही थी और कांग्रेस के कुछ मुस्लिम नेता जिन्हें मौन रह कर समर्थन दे रहे थे वे मांगें आगे चल कर भारत-विभाजन का आधार बनीं। इस खतरे को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने वक्त से पहले भांप लिया था। इसीलिए उन्होंने राष्ट्र के शरीर को क्षीण करने वाली इस मलिनता को धो डालने का संकल्प लिया था। उनका शुद्धि आन्दोलन राष्ट्रीय शरीर की शुद्धि का अभियान था। परन्तु दुर्भाग्य है हमारा और हमारे देश का कि स्वामी जी एवं आर्यसमाज के इस आन्दोलन का प्रवाह हिन्दुओं की संकीर्ण एवं राजनैतिक नेताओं की विवेकहीनता की बाधाओं ने अवरुद्ध कर दिया। काश ! राष्ट्र-मालिन्य के शोधन की यह विधि हमें हृदयंगम हो जाती तो देश को इस दुर्दशा का मुख न देखना पड़ता। जब स्वामी जी आगरा में शुद्धि कर रहे थे तो मुसलमान नेताओं के आग्रह पर कांग्रेस के शीर्षस्थ नेताओं ने स्वामी जी से मांग की कि शुद्धि आन्दोलन से दोनों सम्प्रदायों में द्वेष फैलता है, अतः आप इसे बन्द कर दें। स्वामी जी का उत्तर था—मैं अपने प्रचारक वापिस बुला सकता हूँ, यदि मुस्लिम नेता अपने प्रचारकों को वापिस बुला लें और यह वचन दें कि वे किसी हिन्दू को मुसलमान न बनायेंगे। परन्तु किस में साहस था कि मुस्लिम नेताओं से यह मांग मनवा सके। यही नेता हमारे शुद्धि आन्दोलन का हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द के नाम पर सदा विरोध करते रहे। स्वामी जी अपने मार्ग से विचलित होने वाले न थे। इसी राष्ट्रीय आन्दोलन की वेदि पर उनका गौरवपूर्ण बलिदान हुआ।

इसी बलिदान के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष यह समारोह मनाया जाता है, जो हमें एक विशेष सन्देश तथा स्फूर्ति देता है। महर्षि के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस निमित्त प्राण दिए, आर्यसमाज उस कार्य की पूर्ति को अपना प्रमुख कर्तव्य समझें।

महर्षि दयानन्द धाम आर्य समाज अमृतसर समारोह समिति के तत्त्वावधान में आर्य समाज की स्थापना के 150वें वर्ष को समर्पित संकल्प समारोह का भव्य आयोजन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की अध्यक्षता स्वामी आदित्यवेश जी, श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट व श्री ओम प्रकाश आर्य का रहा सान्निध्य कार्यक्रम का संयोजन डॉ. नवीन आर्य ने किया



दिनांक 30 नवम्बर, 2025 (रविवार) को महर्षि दयानन्द धाम आर्य समाज अमृतसर समारोह समिति के तत्त्वावधान में आर्य समाज की स्थापना के 150वें वर्ष को समर्पित संकल्प समारोह का आयोजन मीट मील रेस्टोरेंट, मजीठा रोड, अमृतसर में आयोजित हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। उनके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान श्री अश्विनी शर्मा एडवोकेट, उपप्रधान श्री अरविन्द मेहता-दीनानगर, उपप्रधान-श्री सुलक्षण सरीन-नवांशहर, महामंत्री-श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री विजय सर्राफ, श्री अश्विनी कुमार मट्टू-मोगा, श्री इन्द्रपाल आर्य-लक्ष्मणसर, श्री धर्मवीर, श्री तुषार गोयल-मोगा, श्री देवपाल आर्य-लुधियाना, श्री परमजीत सिंह एडवोकेट-जालन्धार, श्री तरसे म लाल आर्य-बरनाला-गुरदासपुर, श्री जितेन्द्र त्रेहन-गुरदासपुर, श्री गौरव सरीन-नवांशहर, श्रीमती मधुर भाषिणी-दीनानगर, श्रीमती स्वराज ग़ोवर-अमृतसर आदि विशिष्ट महानुभाव कार्यक्रम में पधारे। इस विशेष कार्यक्रम की व्यवस्था का दायित्व श्री राजकुमार पुलिस इंस्पेक्टर, श्रीमती सुलोचना आर्या, श्रीमती सुनीता पसाहन, श्रीमती वन्दना आर्या, श्रीमती राकेश आर्या, डॉ. अंजू आर्या, श्रीमती खुशी आर्या एवं आर्यमन आर्य ने कुशलता के साथ संभाला। आर्य समाज रमदास के उत्साही युवा कार्यकर्ताओं की भागीदारी भी विशेष रूप से प्रशंसनीय रही।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री ओम प्रकाश आर्य जी की प्रभावशाली प्रस्तावना से हुआ। उन्होंने इस समारोह का उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आगामी एक वर्ष तक हम सभी लोग नई आर्य समाजों की स्थापना एवं पंजाब में आर्यत्व की भावना को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अभियान चलायेंगे। घर-घर तक वैदिक साहित्य पहुंचाने का कार्य करेंगे और युवा पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ने के लिए विशेष प्रयत्न करेंगे। श्री ओम प्रकाश आर्य ने वर्तमान समय में

महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को और अधिक प्रासंगिक बताते हुए कहा कि जिस प्रकार से समाज का सांस्कृतिक पतन हो रहा है उसे रोकने के लिए हमें महर्षि दयानन्द के वेदों की ओर लौटो आह्वान के अनुरूप वेद का संदेश जन-जन तक पहुंचाना होगा। वेद मानव मात्र के कल्याण की भावना से ओत-प्रोत है। वेद में जाति, धर्म, मजहब अथवा अन्य किसी भी प्रकार का भेदभाव पैदा करने वाला विचार नहीं है। आज समाज में जाति के आधार पर, मजहब, सम्प्रदाय के आधार पर, भाषा के आधार, स्त्री और पुरुष तथा गरीब एवं अमीर के आधार पर भेदभाव हो रहा है वह हम सबके लिए चुनौती है और इसे रोकने के लिए हमें विशेष प्रयत्न करना आवश्यक है।

स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आर्य समाज को वर्तमान की परिस्थितियों में एकबार फिर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। आर्य समाज के अतिरिक्त और कोई संगठन इस दिशा में कार्य नहीं कर सकता। अतः हमें गम्भीरता से इस कार्य को शुरू करना चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्य समाज एवं वेद के संदेश को अपने ओजस्वी शब्दों में प्रस्तुत किया और कहा कि आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में हमें अपनी उपलब्धियों एवं गतिविधियों की समीक्षा करके सभी कार्यक्रम बनाना चाहिए। वर्तमान समय के सामयिक मुद्दे जो समाज को कमजोर कर रहे हैं उन पर हमें कार्य करना चाहिए। जातिवाद, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, धार्मिक अन्धविश्वास और पाखण्ड, नारी उत्पीड़न, शोषण जैसी समस्याएं मुंह बाये खड़ी हैं। सारा समाज इन समस्याओं से जूझ रहा है और आर्य समाज की ओर सभी की दृष्टि लगी हुई है। अतः यह आवश्यक है कि हम पूरे



समाज का नेतृत्व करें और इन समस्याओं के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलायें। आज के इस संकल्प समारोह में उपस्थित पंजाब के विभिन्न नगरों से पधारे गणमान्य महानुभावों से निवेदन है कि आप सभी लोग अपने-अपने नगर में प्रभावशाली लोगों की समितियाँ गठित कर लें और आगामी फरवरी, 2026 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस से राष्ट्रव्यापी संस्कृति रक्षा अभियान सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में प्रारम्भ होने जा रहा है। पंजाब के अन्दर उस अभियान को एक-एक नगर तक पहुंचाने का दायित्व आप लोगों के ऊपर है। आर्य समाज के संचायी, प्रचारक, कार्यकर्ता सैकड़ों की संख्या में सांस्कृतिक चेतना यात्रा हर प्रान्त में निकालेंगे और समाज के सभी उन लोगों को भी कार्यक्रम में सम्मिलित करेंगे जो उपरोक्त समस्याओं से देश को मुक्त देखना चाहते हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने श्री ओम प्रकाश आर्य के इस सफल प्रयास एवं सफल आयोजन के लिए मुक्त कंठ से प्रशंसा की और बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह समारोह परम्परा से हठकर एक विशेष स्तर का कार्यक्रम आयोजित किया गया है जिसमें समाज के प्रमुख लोग सम्मिलित हुए हैं।

इस समारोह के संयोजक डॉ. नवीन आर्य ने भी समारोह के सम्बन्ध में अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत किये और कहा कि अब समय आ गया है जब हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत को जन-जन तक पहुंचाना होगा। डॉ. नवीन आर्य ने सभी प्रमुख महानुभावों को आमंत्रित कर उन्हें समारोह की ओर से स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित कराया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री अश्विनी शर्मा एडवोकेट ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि पंजाब में सांस्कृतिक चेतना अभियान को हम अपना पूरा समर्थन और सहयोग देंगे और प्रयास करेंगे कि पूरे पंजाब को एकबार फिर से आर्य समाज के साथ खड़ा कर सकें। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

ग्राम-वजीरपुर, तहसील-गंगोह, जिला-सहारनपुर, उत्तर प्रदेश में आर्य महासम्मेलन का विशाल आयोजन भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे मुख्य अतिथि

प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क एवं गंगोह के एस.डी.एम. श्री सुरेन्द्र सिंह रहे विशिष्ट अतिथि

आर्य भजनोपदेशिका बहन संगीता आर्या ने किया मंच संचालन

राष्ट्रीय व्यायामाचार्य ब्र. सहसरपाल रहे संयोजक



दिनांक 10 दिसम्बर, 2025 को ग्राम-वजीरपुर, तहसील-गंगोह, जिला-सहारनपुर में प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका बहन संगीता आर्या एवं उनके पति श्री दीपक आर्य के संयोजन में विशाल आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। सम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए उनके अतिरिक्त भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के अध्यक्ष श्री सहदेव बेधड़क एवं गंगोह के एस.डी.एम. श्री सुरेन्द्र सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। महासम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से आर्य समाज के अनेक गणमान्य नेता एवं कार्यकर्ता पधारे हुए थे जिनमें श्री महिपाल सिंह प्रधान जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा सहारनपुर, श्री देवेन्द्र सिंह सैनी प्रधान आर्य समाज गंगोह एवं पूर्व प्रधान जिला सभा, श्री विपीन

चौधरी-सहारनपुर, वैदिक विद्वान् आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री-सहारनपुर, श्री अनूप राठी एडवोकेट मंत्री जिला सभा मुजफ्फरनगर, श्री मुकेश आर्य-मुजफ्फरनगर, डॉ. गजराज सिंह आर्य-पूर्व आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद, माता विमला ग़ोवर-फरीदाबाद, चौधरी खेम सिंह आर्य, श्री वरुण आर्य-पानीपत, श्री नीरज आर्य-पानीपत, स्वामी मुक्तिवेश-टिठौली, श्री ऋषिदेव आर्य-भजनोपदेशक, श्री सुरेन्द्र-भजनोपदेशक, आर्य समाज बिजौरा, जिला-बागपत, आर्य समाज सौंजनी जाटान के कार्यकर्ता श्री बॉबी प्रधान ग्राम पंचायत भाजू, श्री धर्मेन्द्र आर्य-भाजू, श्री वेदपाल आर्य भजनोपदेशक आदि के अतिरिक्त विभिन्न गांव से भी भारी संख्या में स्त्री-पुरुष सम्मेलन में पधारे।

प्रातःकाल यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

तत्पश्चात् विधिवत रूप से सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम का संयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के व्यायामाचार्य ब्र. सहसरपाल ने किया और मंच का संचालन आर्य समाज की भजनोपदेशिका बहन संगीता आर्या ने संभाला। श्री वेदपाल आर्य, स्वामी मुक्तिवेश, श्री सुरेन्द्र सिंह व श्री ऋषिदेव आर्य के भजनों के कार्यक्रम के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी का मुख्य उद्बोधन हुआ।

स्वामी आर्यवेश जी ने मनुष्य जीवन के उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए अध्यात्म को अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि चारों वेदों में गायत्री मन्त्र बुद्धि का मन्त्र है और इस मन्त्र के द्वारा परमात्मा से सदबुद्धि की कामना व प्रार्थना की जाती है। बुद्धि से ही मनुष्य के सभी कार्य सम्पन्न होते हैं। बुद्धि

शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य समाज पाबूपुरा (जोधपुर) का स्वर्ण जयन्ती समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न
जोधपुर में बने महर्षि दयानन्द के नाम से अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक - स्वामी आर्यवेश
सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अभियान तेज करेगा आर्य समाज - बिरजानन्द एडवोकेट
स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका थी - स्वामी आदित्यवेश
महिलाओं को शिक्षा का अधिकार आर्य समाज ने दिलाया - मनीषा पंवार
महर्षि दयानन्द सरस्वती महान समाज सुधारक थे - राजेन्द्र सिंह सोलंकी
आर्य समाज पाबूपुरा की उपलब्धियों पर हमें गर्व है - भंवरलाल आर्य



आर्य समाज पाबूपुरा, जोधपुर, राजस्थान का स्वर्ण जयन्ती समारोह 7 दिसम्बर, 2025 (रविवार) को उत्साहपूर्ण वातावरण के बीच सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, जोधपुर विकास बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी, जोधपुर शहर की पूर्व विधायक श्रीमती मनीषा पंवार, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के उपप्रधान श्री नारायण सिंह आर्य, सभा के उपमंत्री श्री हरदेव आर्य, श्री दलपत सिंह आर्य—जालौर, आर्य वीरदल जोधपुर के अध्यक्ष श्री हरि सिंह आर्य, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं. केशव देव शर्मा, अस्सिस्टेंट कमिश्नर्स श्री पदम सिंह मिर्धा आदि के अतिरिक्त अनेक प्रतिष्ठित विद्वान, आर्य वीर दल के अधिकारी और सैकड़ों आर्यजन उपस्थित रहे।



समारोह का शुभारम्भ प्रातः 50 कुण्डीय महायज्ञ से हुआ, जिसके ब्रह्मा पंडित केशव देव शर्मा रहे। वेद मंत्रों की ध्वनि और यज्ञ की दिव्यता ने वातावरण को पूरी तरह वैदिक तेज से परिपूर्ण कर दिया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन आर्य वीर दल राजस्थान के प्रधान श्री भंवरलाल आर्य ने किया और उनके साथ श्री भंवरलाल हठवाल सह संयोजक के रूप में मुख्य भूमिका में रहे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि किसी भी सामाजिक,

धार्मिक या शैक्षिक संस्था की पचास वर्षों की निरंतर यात्रा अपने-आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होती है। यह अवधि न केवल संस्था की स्थायित्व क्षमता को दर्शाती है, बल्कि उसके उद्देश्यों, सिद्धांतों और समाज के प्रति उसके समर्पण की भी सशक्त गवाही देती है। आर्य समाज पाबूपुरा ने पिछले पांच दशकों में जिस निष्ठा, कर्मठता और समर्पण के साथ कार्य किया है, वह वास्तव में अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज पाबूपुरा ने युवा निर्माण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। समाज सुधार के क्षेत्र में भी आर्य समाज की भूमिका अत्यंत सराहनीय रही है। नारी शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, समानता और नैतिक मूल्यों के प्रचार में आर्य समाज ने सदैव अग्रणी भूमिका निभाई है।

स्वामी जी ने राष्ट्र सेवा को आर्य समाज का मूल उद्देश्य बताते हुए कहा कि देशभक्ति, अनुशासन और सेवा भाव की भावना को जन-जन तक पहुंचाने में आर्य समाज का योगदान अतुलनीय है। वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के माध्यम से समाज को अपनी जड़ों से जोड़ने का कार्य आर्य समाज निरंतर करता आ रहा है। यज्ञ, स्वाध्याय, सत्संग और वैदिक सिद्धांतों के माध्यम से समाज में नैतिकता और सदाचार की भावना को मजबूत किया गया है। उन्होंने कहा कि वर्तमान वर्ष आर्य समाज के लिए विशेष रूप से ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण है। यह वर्ष महान समाज सुधारक, वेदों के प्रचारक और आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती का स्मरण वर्ष है। साथ ही, आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष भी इसी कालखंड में पूर्ण हो रहे हैं। यह अवसर आत्ममंथन, संकल्प और

शेष पृष्ठ 7 पर



आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने तथा

आर्ष गुरुकुल एवं वानप्रस्थ आश्रम, नोएडा का वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सामाजिक समरसता के उन्नायक थे - स्वामी आर्यवेश



आर्ष गुरुकुल एवं वानप्रस्थ आश्रम, नोएडा के तत्वावधान में वार्षिकोत्सव तथा आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण

होने के पावन उपलक्ष्य में दिनांक 10 से 14 दिसम्बर, 2025 तक विविध वैदिक एवं बौद्धिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन निरन्तर यज्ञ, वैदिक अनुष्ठान तथा समाजोपयोगी विषयों पर विविध सम्मेलन एवं विचार-गोष्ठियाँ आयोजित होती रहीं। इसी श्रृंखला में दिनांक 13 दिसम्बर, 2025 (शनिवार) को प्रातः 10 बजे से अपराह्न 1 बजे तक 'सामाजिक समरसता सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इस महत्वपूर्ण सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य वैदिक विचारधारा के आलोक में सामाजिक एकता, आपसी सद्भाव, भाईचारे एवं समरस समाज की स्थापना पर गंभीर मंथन करना था।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महर्षि दयानन्द



सरस्वती जी के महान जीवन, उनके क्रान्तिकारी विचारों एवं राष्ट्र के प्रति उनके अद्वितीय योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि

शेष पृष्ठ 7 पर

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती : त्याग, तप और राष्ट्रसेवा के अमर प्रतीक

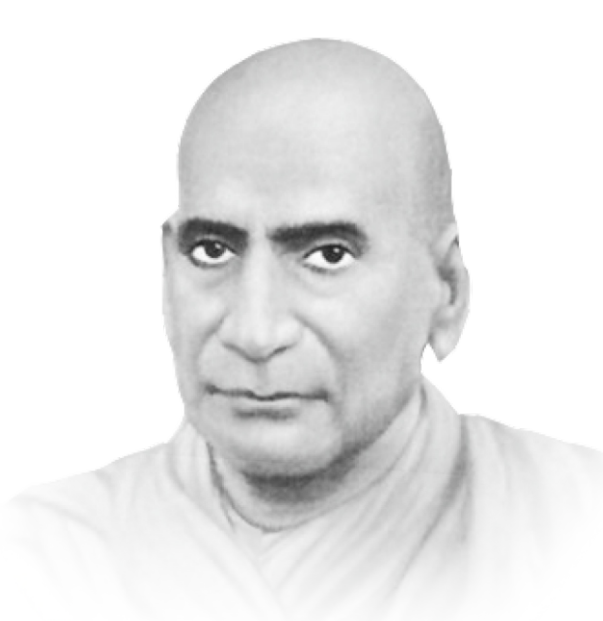
— आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती जिन्हें आरंभिक जीवन में मुंशीराम के नाम से जाना जाता था, भारतीय समाज और संस्कृति के पुनर्जागरण के उन महान व्यक्तित्वों में से एक थे जिन्होंने स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों को जीवन में आत्मसात कर अपने कर्म, त्याग और तप के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान की। स्वामी जी न केवल एक तेजस्वी संन्यासी थे बल्कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम, समाज सुधार और शिक्षा के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ने वाले महान पुरुष थे। इस वर्ष उनके बलिदान को 100 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। यह अवसर हमें उनके आदर्शों को आत्मसात करने और समाज को संगठित करने का संकल्प लेने का प्रेरक क्षण प्रदान करता है।

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती का जन्म 22 फरवरी, 1856 को पंजाब के जालंधर जिले के तलवन गाँव में हुआ था। उनके पिता एक पुलिस इंस्पेक्टर थे और परिवार में समृद्धि का वातावरण था। बाल्यकाल का नाम बृहस्पति विज था किंतु आगे चलकर वे मुंशीराम नाम से प्रसिद्ध हुए। प्रारंभिक जीवन भोग विलास और सुविधा में बीता किंतु नियति ने उन्हें वह मार्ग दिखाया जिसने उनके जीवन का उद्देश्य ही बदल दिया। स्वामी दयानंद सरस्वती से उनकी भेंट उनके जीवन का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुई। उस समय तक मुंशीराम एक सफल वकील के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। वे आर्य समाज की गतिविधियों से जुड़ने लगे और समाज सुधार के कार्यों में सक्रिय भाग लेने लगे। उनकी पत्नी शिव देवी अत्यंत धार्मिक और सेवा भाव से ओत-प्रोत थीं। उनके निःस्वार्थ प्रेम और स्वामी दयानंद के साक्षात्कार ने मुंशीराम के जीवन में अध्यात्म का नया प्रकाश जगा दिया।

विवाहोपरान्त उनके दो पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। जीवन में स्थायित्व आया किंतु पत्नी के निधन ने उनके अंतर्मन को झकझोर दिया। यही वह क्षण था जब उन्होंने सांसारिक जीवन का परित्याग कर संन्यास ग्रहण किया और 1917 में वे स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। उनका संन्यास मात्र वैराग्य का प्रतीक नहीं था बल्कि यह कर्मयोग का आरंभ था।

1902 में उन्होंने हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी



विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह संस्थान भारतीय संस्कृति और शिक्षा के पुनरुद्धार का केंद्र बना। यहाँ वैदिक ज्ञान और आधुनिक विषयों का अद्भुत समन्वय हुआ। स्वामी श्रद्धानंद का मानना था कि भारतीयता की जड़ें तभी मजबूत होंगी जब हमारी शिक्षा भारतीय संस्कारों से ओतप्रोत होगी। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल आज भी उसी भावना का सजीव उदाहरण है।

स्वामी श्रद्धानंद ने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किया बल्कि समाज सुधार के अनेक आंदोलन भी चलाए। 1920 के दशक में उन्होंने शुद्धि आंदोलन प्रारंभ किया जिसका उद्देश्य उन लोगों को पुनः अपने मूल धर्म में लाना था जो किसी कारणवश उससे दूर हो गए थे। उन्होंने मलकाना राजपूतों समेत अनेक समुदायों को अपने पूर्वजों की संस्कृति और धर्म से जोड़ने का प्रयास किया। इस कार्य ने उन्हें जनता के हृदय में अमर बना दिया।

वे अछूतों के उद्धार के लिए भी समर्पित थे। उन्होंने मंदिरों के द्वार सबके लिए खोलने की वकालत की और सामाजिक समानता को हिंदू धर्म की आत्मा बताया। डॉ. भीमराव आम्बेडकर ने उन्हें अछूतों के महानतम

और सबसे सच्चे हितैषी कहकर सम्मानित किया। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि धर्म का सार करुणा सेवा और समरसता में निहित है।

स्वामी श्रद्धानंद का योगदान स्वतंत्रता संग्राम में भी उल्लेखनीय रहा। 1919 से 1922 तक वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े रहे। उन्होंने जनता को आत्मनिर्भरता और स्वदेशी के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। 1922 में गुरु के बाग सत्याग्रह के दौरान उनके ओजस्वी भाषण से प्रभावित होकर हजारों युवा स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े। अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया किंतु उनका मनोबल अटूट रहा।

23 दिसंबर, 1926 को जब वे दिल्ली में अपने निवास पर थे एक मुस्लिम उन्मादी अब्दुल रशीद ने धर्म चर्चा के बहाने उनके घर में प्रवेश किया और गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। उनका बलिदान उस कालखंड की सांप्रदायिक चुनौतियों के बीच एक अमर संदेश छोड़ गया कि सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति मृत्यु के पश्चात भी जीवित रहता है।

भारत सरकार ने 1970 में उनके सम्मान में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया। आज जब उनके बलिदान को 100 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं हमें यह स्मरण करना चाहिए कि स्वामी दयानंद सरस्वती के महानतम शिष्य स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण हिंदू समाज, मानवता और संस्कृति के उत्थान को समर्पित किया। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि समाज तभी प्रगति कर सकता है जब वह अपने मूल संस्कारों शिक्षा और संस्कृति से जुड़ा रहे।

इस अवसर पर हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने समाज को संगठित करेंगे हिंदू संस्कृति के प्रचार प्रसार में योगदान देंगे और अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी अपनी जड़ों से जोड़ने का प्रयास करेंगे। स्वामी श्रद्धानंद का जीवन एक दीपक की तरह है जो हमें यह मार्ग दिखाता है कि धर्म और राष्ट्र की सेवा ही मनुष्य जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है।

— फ्लैट नंबर सी 1, पूर्ति अपार्टमेंट विकासपुरी नई दिल्ली 110018, मो.:— 9810084806

पृष्ठ 1 का शेष

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सफलता पूर्वक हुआ सम्पन्न

स्वामी श्रद्धानंद जी की बलिदान शताब्दी के अवसर पर वर्ष 2026 में हरिद्वार स्थित कांगड़ी में अंतरराष्ट्रीय श्रद्धानंद बलिदान शताब्दी समारोह आयोजित किया जाएगा।

कार्यक्रम के संयोजक एवं नशाबंदी संघर्ष समिति के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने देश में पूर्ण शराबबंदी लागू करने की मांग की तथा प्रधानमंत्री से इस विषय पर राष्ट्रीय नीति बनाने का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि हरियाणा में जिला स्तर पर नशाबंदी समितियाँ गठित कर जन-जागरण अभियान चलाया जाएगा।

उत्तर प्रदेश के पूर्व गन्ना मंत्री एवं चांदपुर, बिजनौर से वर्तमान विधायक स्वामी ओमवेश जी ने कहा कि देश में सामाजिक सौहार्द की स्थापना केवल वेद आधारित विचारधारा से ही संभव है।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि बेटियाँ केवल नारे बदलने से नहीं, बल्कि सामाजिक मानसिकता बदलने से सुरक्षित होंगी।

सार्वदेशिक आर्या युवती परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन प्रवेश आर्या ने छेड़छाड़ एवं दहेज उत्पीड़न की बढ़ती घटनाओं पर गहरी चिंता व्यक्त की।

समाजसेवी श्री रणवीर लोहान ने नशे को समाज पर कलंक बताते हुए आर्य समाज के नशामुक्ति अभियान को पूर्ण समर्थन देने की घोषणा की।

डेयरी एसोसिएशन जींद के प्रधान श्री रमेश ढिल्लों ने कहा कि आर्य समाज देशभर में जन-जागरण का निरंतर अभियान चला रहा है।

महासम्मेलन के मंच संचालक श्री जगफुल सिंह ढिल्लों ने कहा कि ऋषि दयानंद की विचारधारा आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है।

इस अवसर पर श्री अशोक आर्य महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री सज्जन सिंह राठी कार्यकारी अध्यक्ष, मा0 अजीतपाल, श्री ऋषिराज शास्त्री, राष्ट्रीय व्यायामाचार्य ब्र. सहसरपाल आर्य, श्री धर्मेन्द्र आर्य (छपराेली उ.प्र.), श्री अवनीश आर्य (रठौड़ा, उ0 प्र0), श्री धर्मवीर सरपंच अध्यक्ष लोकशक्ति मंच हरियाणा, डॉ. राजपाल आर्य, श्री सत्यपाल सरपंच, श्री विजय आर्य (जाजवान) श्री विजय कुमार आर्य, श्री अश्विनी आर्य व श्री रमेश आर्य (नरवाना), प्राचार्य श्री आजाद सिंह व श्री बलराम

आगामी कार्यक्रम की घोषणा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में संस्कृति रक्षा अभियान राष्ट्रीय स्तर पर प्रारम्भ करने के लिए महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्मदिवस 12 फरवरी, 2026 से 'सांस्कृतिक जन-चेतना यात्रा' प्रारम्भ की जायेगी। यह यात्रा 11 फरवरी, 2026 को रोहतक से प्रारम्भ होकर हरियाणा के विभिन्न जिलों से होते हुए 18 फरवरी, 2026 को नारनौल में सम्पन्न होगी। इसी प्रकार प्रत्येक महीने में अलग-अलग प्रदेशों में जन-चेतना यात्राएं आयोजित की जायेंगी और पूरे देश में संस्कृति रक्षा के लिए वेद का संदेश और आर्य समाज का अभियान चलाया जायेगा।

आर्य (सोनीपत), श्री जयवीर सोनी (हिसार), श्री सत्यवीर आर्य व श्रीमती जगमति मलिक (कैथल), श्री राजेश आर्य, श्री पाणिनी आर्य (फरमाणा, रोहतक), श्री महिपाल सिंह ढिल्लो (रोहतक), श्री बाबूलाल आर्य, (भिवानी), श्री रघुबीर सिंह बूरा, श्री विजेन्द्र सिंह बूरा, श्री वीरेन्द्र सिंह (घोघड़िया), श्री दयानंद आर्य-अहीरका, श्री टेकराम आर्य-सरपंच, श्री सूरजमल आर्य पहलवान, श्री श्रवण कुमार आर्य-छातर, श्री सूरजमल आर्य, श्री वीरेन्द्र पहलवान-खटकड़, श्री सत्यवान कौशिक-दुर्जनपुर, श्री सुबेर सिंह आर्य-पालवां, श्री वेदपाल आर्य-अलेवा, स्वामी रामानन्द-सामलो, डॉ. होशियार सिंह व श्री जयपाल शर्मा-राजौन्द, श्री राजवीर आर्य सफीदों, डॉ. बलवीर आर्य-जुलाना, श्री अशोक आर्य-बहल, श्री बलवीर सिंह शास्त्र श्री महावीर सिंह शास्त्री-रोहतक, श्री ध्यानचन्द आर्य-कलायत, श्री योगेश्वर मुनि व श्री प्रियदत्त-ऊँचाना, श्री कुलदीप सिंह ढांडा, श्री रामनिवास ढिल्लों, श्री संजय ढिल्लों, श्री राजवीर आर्य-जीन्द, श्रीमती चन्द्रसुखी आर्या-कैथल, श्रीमती शशि आर्या-रधाना, श्रीमती सुषमा आर्या-रोहतक, श्री संसार सिंह चौधरी-बिजनौर, श्री अशोक वशिष्ठ-दिल्ली, ब्र. अग्निदेव नैष्ठिक, स्वामी दिव्यानन्द-गुलकनी सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की रही उपस्थिति।

कार्यक्रम के दौरान आगन्तुक अतिथियों को शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम बेहद उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ 4 का शेष

ग्राम-वजीरपुर, तहसील-गंगोह, जिला-सहारनपुर, उत्तर प्रदेश में आर्य महासम्मेलन का विशाल आयोजन भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

ही सही और गलत निर्णय करती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि सन्मार्ग की ओर चलने का निर्णय करती है वह व्यक्ति उन्नति के शिखर तक पहुंचता है और जिस व्यक्ति की बुद्धि गलत मार्ग की ओर प्रेरित करती है उसका घोर पतन भी हो जाता है। बुद्धि का जो महत्त्वपूर्ण तत्त्व है वह है – विवेक। अतः विवेक को जाग्रत रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने जीवन में काम, क्रोध, मद, लोभ एवं अहंकार आदि दुर्गुणों को मिटाने का प्रयत्न करें। ऐसा अभ्यास बढ़ायें जिससे हम सदैव सावधानी पूर्वक इन दुर्गुणों पर विजय पा सकें। स्वामी आर्यवेश जी ने सभी को प्रेरित किया कि भौतिकवाद की आंधी में प्रत्येक व्यक्ति अध्यात्म से दूर हटकर भौतिकता की ओर जा रहा है। संन्या व योग साधना आदि से कोसों दूर भाग रहा है। अतः प्रतिदिन सुबह और सायं प्रत्येक व्यक्ति को कुछ समय के लिए एकान्त में बैठकर गायत्री मन्त्र का जाप करना चाहिए और इसके अर्थ का चिन्तन करते हुए सद्बुद्धि की प्रार्थना करनी चाहिए। धीरे-धीरे सद्बुद्धि की प्रार्थना मनुष्य के हृदय में अपना स्थान बना लेगी और मन में उठने वाली दुष्प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने का कार्य करेगी। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि धर्म हमारे सभी कार्यों का आधार होना चाहिए। दैनिक व्यवहार में धर्म का आचरण अर्थोपार्जन में धार्मिक भावना एवं जीवन की ऐंष्णाओं की पूर्ति में धार्मिक अनुशासन का यदि पालन करें तो वह अपने जीवन के

उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है। वैदिक संस्कृति ही हमें प्रेरित करती है कि हमें जीवन में आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का समन्वय रखना चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी ने मध्यान्ह के बाद आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द की उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि स्वाधीन भारत के निर्माण में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका रही है। आर्य समाज ने शिक्षा, समाज सुधार एवं स्वतंत्रता के लिए अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसके परिणामस्वरूप देश को आजादी प्राप्त हुई।

गंगोह के एस.डी.एम. श्री सुरेन्द्र जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि मेरी धर्मपत्नी गुरुकुल की स्नातिका है और प्रतिदिन प्रातःकाल घर में यज्ञ होता है और मैं अपनी आहुति देकर ही कार्यालय जाता हूँ, मेरा प्रयास रहता है कि लोगों की समस्याओं को पूरी ईमानदारी से सुनकर उनका सहयोग करूँ। आज स्वामी आर्यवेश जी के विचार सुनकर मुझे और अधिक प्रेरणा मिली है कि मैं अपने कार्य को आध्यात्मिक भावना से निष्ठा के साथ करने के लिए संकल्प करता हूँ। उन्होंने आयोजन की सफलता के लिए बहन संगीता आर्या की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी आचार्या प्रतिभा भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुईं।

श्री सहदेव बेधड़क ने अपने भजनों के माध्यम से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया और आर्यों का आह्वान किया कि आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए हम सभी को कसर कसकर कार्य करना होगा।

बहन संगीता आर्या ने भी अपने ओजस्वी भजन प्रस्तुत किये। जिस पर उपस्थित आर्यजनों ने उन्हें पारितोषिक देकर सम्मानित किया। आर्य महासम्मेलन की ओर से सैकड़ों प्रतिष्ठित आर्य नेताओं एवं अधिकारियों को अंग वस्त्र एवं पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया और बहन संगीता आर्या एवं श्री दीपक आर्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। सम्मेलन में पधारे हुए सभी लोगों के लिए ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। प्रातःकाल से लेकर सायं 5 बजे तक सम्मेलन सफलता के साथ चलता रहा। पूरे गांव में सम्मेलन की धूम मची हुई थी और लोग आर्य समाज की मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे थे। यह महासम्मेलन बहन संगीता आर्या एवं उनके पति श्री दीपक आर्य के विशेष प्रयत्न एवं पुरुषार्थ से आयोजित किया गया जिसमें गांव के प्रधान एवं अन्य प्रतिष्ठित लोगों ने भी सम्मिलित होकर शोभा बनाई और आस-पास के कई गांव से सैकड़ों की संख्या में लोग सम्मिलित हुए। श्री देवेन्द्र सिंह सैनी प्रधान आर्य समाज गंगोह ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

पृष्ठ 5 का शेष

आर्ष गुरुकुल एवं वानप्रस्थ आश्रम, नोएडा का वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

दयानन्द केवल एक संन्यासी ही नहीं थे, अपितु वे समाज-सुधारक, राष्ट्रचिन्तक और वैदिक संस्कृति के महान पुनरुद्धारक थे। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन मानव समाज को अज्ञान, रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास एवं सामाजिक विभाजन से मुक्त करने के लिए समर्पित कर दिया।

स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का सम्पूर्ण दर्शन ‘कृष्णन्तो विश्वमार्यम्’ के वैदिक सूत्र पर आधारित था, जिसका आशय है – संपूर्ण विश्व को श्रेष्ठ, सुसंस्कृत और सदाचारी बनाना। उनका मानना था कि समाज की वास्तविक उन्नति तभी संभव है, जब उसमें सत्य, धर्म, न्याय और समानता की स्थापना हो। इसी उद्देश्य से उन्होंने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। महर्षि दयानन्द जी ने कहा कि “वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।”

महर्षि दयानन्द जी ने समाज को जाति, पंथ और संप्रदाय की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर एक सूत्र में बाँधने का सतत प्रयास किया। उन्होंने स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह, शूद्रों एवं नारी के अधिकारों की प्रबल वकालत की और सामाजिक कुरीतियों पर निर्भीक होकर प्रहार किया। उनका जीवन इस बात का जीवंत उदाहरण था कि सच्चा संन्यास समाज से पलायन नहीं, बल्कि समाज के लिए समर्पण होता है।

स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने देश की आज़ादी के लिए भी जनमानस को जागृत किया। उन्होंने स्वराज्य का उद्घोष उस समय किया, जब इस विषय पर बोलना भी दुष्कर था। उनका स्पष्ट मत था कि परतंत्रता मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सबसे बड़ा बाधक है। उन्होंने युवाओं को राष्ट्रहित में संगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी और आत्मगौरव तथा आत्मनिर्भरता का भाव जाग्रत किया।

इन्हीं महान उद्देश्यों की पूर्ति के लिए महर्षि दयानन्द जी ने ‘आर्य समाज’ की स्थापना की। आर्य समाज का मूल उद्देश्य समाज में वैदिक मूल्यों की पुनर्स्थापना, सामाजिक समरसता, आपसी भाईचारे तथा राष्ट्र की एकता और अखण्डता को सुदृढ़ करना है। आज भी आर्य समाज संगठन उन्हीं आदर्शों को लेकर निरन्तर समाजोत्थान के कार्यों में संलग्न है।

स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में यह भी कहा कि वर्तमान समय में जब समाज अनेक प्रकार के विभाजन और वैचारिक भ्रम से जूझ रहा है, तब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचार और अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। आर्य समाज आज भी सत्य, सेवा और सद्भाव के मार्ग पर चलते हुए समाज को जोड़ने का कार्य कर रहा है तथा राष्ट्र की एकता, अखण्डता और सांस्कृतिक चेतना को जागृत रखने के लिए निरन्तर प्रयासरत है। स्वामी आर्यवेश जी ने आह्वान किया कि हम सभी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करें और वैदिक संस्कृति के आलोक में एक सशक्त, संगठित और समरस राष्ट्र के निर्माण में सहभागी बनें। स्वामी आर्यवेश जी ने वेद के संगठन सूक्त को उद्धृत करते हुए कहा कि समाज में समरसता के लिए आवश्यक है कि सभी लोग साथ मिलकर चलें, साथ मिलकर सोचें, साथ मिलकर बोलें। इसी प्रकार जन्मना जाति की अवधारणा को समाप्त कर वैदिक वर्ण व्यवस्था के अनुसार गुण, कर्म, स्वभाव एवं योग्यता के आधार पर मनुष्य का आंकलन किया जाये न कि कथित जाति प्रथा के आधार पर। वेद में अनेक मंत्र आये हैं जिनसे सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त होता है। वसुधैव कुटुम्बकम् हमें इसी दिशा की ओर प्रेरित करता है। स्वामी जी ने इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए आर्ष गुरुकुल एवं

वानप्रस्थ आश्रम, नोएडा के समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं दी।

सम्मेलन में मुख्यरूप से सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त वैदिक विद्वान् डॉ. वेदपाल जी संरक्षक परोपकारिणी सभा, अजमेर, डॉ. संन्या शर्मा, कर्नल कर्ण सिंह खर्ब, श्री महेश सक्सेना व प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री दिनेश पथिक ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। इस सम्मेलन का मंच संचालन गुरुकुल के आचार्य एवं प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. जयेन्द्र आचार्य ने किया और व्यवस्था का दायित्व आर्य समाज की प्रधान श्रीमती मधु भसीन, मंत्री कैप्टन अशोक गुलाटी, कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र सूद, उपप्रधान श्री रविन्द्र सेठ व श्री विजेन्द्र कठपालिया, उपमंत्री श्री रवि शंकर अग्रवाल व श्री सौरभ लरोईया, उपाचार्य डॉ. ओंकार आदि ने संभाली हुई थी। इस अवसर पर सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह एवं शॉल देकर सम्मानित किया गया।

इसी तरह से विभिन्न सम्मेलनों में अनेकों विद्वानों एवं संन्यासियों तथा भजनोपदेशकों के उद्बोधन एवं सारगर्भित प्रवचन एवं भजन सुनने को मिले। दिनांक 10 व 11 दिसम्बर, 2025 को चतुर्वेद शतक यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम रहा तथा दिनांक 12 दिसम्बर, 2025 को प्रातः 10 बजे से भव्य विशाल शोभा यात्रा का भी आयोजन हुआ। शोभा यात्रा आर्य समाज सैक्टर-33 से आरम्भ होकर नोएडा के विभिन्न सैक्टरों से वाहनों द्वारा निकाली गई। सम्मेलन में पधारे आर्यजनों ने शोभा यात्रा में बढ़-चढ़कर भाग लिया। दिनांक 14 दिसम्बर, 2025 को कार्यक्रम भव्यता एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ 5 का शेष

आर्य समाज पाबूपुरा (जोधपुर) का स्वर्ण जयन्ती समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

नवचेतना के साथ आगे बढ़ने का संदेश देता है।

अपने वक्तव्य में स्वामी जी ने सरकार से यह मांग भी रखी कि जोधपुर में स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से एक भव्य अंतर्राष्ट्रीय स्मारक का निर्माण किया जाए, जिससे आने वाली पीढ़ियां उनके विचारों और योगदान से प्रेरणा ले सकें। इसके साथ ही उन्होंने देश के किसी एक प्रमुख हवाई अड्डे का नाम ऋषि दयानन्द सरस्वती के नाम पर रखने का प्रस्ताव रखा, ताकि उनके महान कार्यों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिल सके। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज का उद्देश्य केवल अतीत का गौरवगान नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य को सशक्त बनाना है। वैदिक मूल्यों, राष्ट्रभक्ति और मानवता के संदेश के साथ आर्य समाज निरंतर समाज के उत्थान के लिए कार्य करता रहेगा। इस अवसर पर स्वामी जी ने आर्य समाज पाबूपुरा के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को स्वर्ण जयन्ती समारोह की सफलता पर शुभकामनाएं देकर प्रोत्साहित किया।

स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने संबोधन में कहा कि भारत की स्वतंत्रता में आर्य समाज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान शताब्दी वर्ष पर 2026 में हरिद्वार में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया जाएगा, जिसमें देश-विदेश से प्रतिनिधि भाग लेंगे। उन्होंने जोधपुरवासियों को इस ऐतिहासिक आयोजन में शामिल होने का हार्दिक निमंत्रण दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट ने पूरे देश में नशे और गौहत्या पर रोक लगाने के

लिए कठोर राष्ट्रीय नीति लागू करने की मांग की। उन्होंने कहा कि समाज सुधार और राष्ट्र कल्याण की दिशा में आर्य समाज लगातार जागरूकता का कार्य करता रहा है।

पूर्व राज्य मंत्री श्री राजेंद्र सोलंकी ने आर्य समाज के सामाजिक सुधार, शिक्षा, नारी उत्थान और राष्ट्र निर्माण में दिए गए अमूल्य योगदान को स्मरण किया।

जोधपुर शहर की पूर्व विधायक श्रीमती मनीषा पंवार ने कहा कि भारत में महिला अधिकारों की सबसे प्रबल आवाज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ही सबसे पहले उठाई थी, और आज भी वही विचारधारा समाज को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देती है।

समारोह में आर्य समाज पाबूपुरा के 50 वर्षों के गौरवशाली इतिहास को संजोते हुए एक पुस्तक का विमोचन किया गया। पिछले पांच दशकों में समाज के विकास में योगदान देने वाले विशिष्ट व्यक्तियों को शॉल और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया, जिससे समारोह और भी गरिमामय हो गया।

कार्यक्रम में आर्य वीर दल के युवाओं और वीरांगनाओं ने आकर्षक व्यायाम, योग, दंड-बैठक, शारीरिक प्रदर्शन और शौर्य कौशल का अद्भुत प्रदर्शन किया। उनकी प्रस्तुति को दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सराहा। बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं, युवाओं और आर्यजनों ने समारोह को विशेष उत्साह प्रदान किया। इस अवसर पर श्री भंवरलाल हठवाल, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री चांदमल आर्य, श्री हरिसिंह आर्य, श्री जितेंद्र सिंह आर्य, श्री लक्ष्मण सिंह आर्य,

श्री गजेसिंह भाटी, श्री चंपालाल आर्य-प्रधान, श्री रोशनलाल आर्य-मंत्री तथा श्री रितेश आर्य-कोषाध्यक्ष आर्य समाज पाबूपुरा, श्री मदल गोपाल आर्य, श्री शिव प्रकाश सोनी, श्री द्वारका दास आर्य, श्री हेमन्त शर्मा, श्री विनोद आचार्य, श्री विक्रम सिंह आर्य, श्री पूनम सिंह शेखावत, श्री विकास आर्य, श्री दीपक पंवार, श्री विनोद कुमार-जालौर, श्री शिवदत्त आर्य, श्री कृष्ण कुमार आदि-जालौर, कुमारी छवि आर्या-पाली आदि भी उपस्थित रहे।

स्वर्ण जयन्ती समारोह की व्यवस्था एवं संचालन का दायित्व मुख्यरूप से आर्य वीरदल राजस्थान के अध्यक्ष एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यकारी प्रधान श्री भंवर लाल आर्य ने संभाला तथा श्री भंवरलाल हठवाल एवं आर्य समाज की पूरी कार्यकारिणी ने उनका पूरा सहयोग किया। कार्यक्रम में सभी आगन्तुक महानुभावों के लिए ऋषि लंगर की समुचित व्यवस्था की गई थी। पाबूपुरा गांव के लोगों ने कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपना पूरा सहयोग प्रदान किया। आर्य वीरदल अर्जुन शाखा के हमारे वीरों ने व्यवस्था में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

समारोह के अंत में सभी अतिथियों का शॉल एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया गया। पूरा कार्यक्रम वैदिक अनुशासन, सौहार्द और सांस्कृतिक समृद्धि की अद्भुत मिसाल बनकर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। यह स्वर्ण जयंती समारोह न केवल पचास वर्षों की गौरवगाथा का उत्सव था, बल्कि आने वाले भविष्य के लिए नई प्रेरणा और नई दिशा प्रदान करने वाला ऐतिहासिक आयोजन भी सिद्ध हुआ।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें



आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :-
www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

आर्य समाज, अंसल सुशान्त सिटी, वेद व्यासपुरी, मेरठ का वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से सम्मिलित हुए



आर्य समाज अंसल सुशान्त सिटी, वेद व्यासपुरी, मेरठ अपना द्वितीय वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार समारोह दिनांक 1 से 3 दिसम्बर, 2025 की तिथियों में सेंट्रल पार्क, गोल चक्कर, अंसल सुशान्त सिटी, सैक्टर-3, मेरठ में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त योग ऋषि परम पूज्य स्वामी कर्मवीर जी, ओजस्वी वक्ता पं० विरेन्द्र रत्नम् जी का सानिध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ तथा आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य श्री सोमदेव जी (राजस्थान) एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० कुलदीप आर्य जी (बिजनौर) तथा श्रीमती कविता आर्या के राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत भजनों की धूम रही।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में "राष्ट्र निर्माण में आर्य समाज की भूमिका" विषय पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि आधुनिक भारत के निर्माण में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एवं उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक रहा है। महर्षि दयानन्द जी

ने ऐसे समय में समाज को वैदिक मूल्यों की ओर लौटने का आह्वान किया, जब देश सामाजिक रूढ़ियों, अज्ञान और परतन्त्रता से ग्रस्त था।

स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्वराज्य की अवधारणा को सर्वप्रथम जनमानस के समक्ष प्रस्तुत कर राष्ट्रचेतना का जागरण किया। उन्होंने सत्य, धर्म, समानता और न्याय पर आधारित समाज की कल्पना की, जो राष्ट्र निर्माण की सुदृढ़ आधारशिला है।

आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुलों एवं विद्यालयों की स्थापना कर चरित्रवान, राष्ट्रभक्त एवं जागरूक नागरिकों का निर्माण किया।

आर्य समाज ने सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, नारी सम्मान, समान अधिकार तथा सामाजिक समरसता को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान आर्य समाज से प्रेरित अनेक महापुरुषों ने राष्ट्रहित में त्याग और बलिदान दिया। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आज भी आर्य समाज राष्ट्र की एकता, अखण्डता और सांस्कृतिक चेतना के संरक्षण हेतु निरन्तर कार्यरत है, जो राष्ट्र निर्माण की निरन्तर प्रक्रिया को आगे बढ़ा रहा है। स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए आर्य समाज अंसल सुशान्त सिटी, वेद व्यासपुरी, मेरठ के समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं दी।

स्वामी जी के व्याख्यान के अवसर पर आर्य समाज थापरनगर के प्रधान श्री राजेश सेठी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रीति सेठी, आर्य नेता श्री हरवीर जी सुमन, श्री चन्द्रकान्त आर्य,

डॉ. वीरेन्द्र सिंह, डॉ. जयभगवान, प्रि. एस.पी. यादव, पूर्व न्यायाधीश ए. के. अग्रवाल, श्री विकास चौधरी, श्री कृष्णपाल सिंह व श्री देवेन्द्र सिंह आदि भी उपस्थित थे।

आर्य समाज अंसल सुशान्त सिटी, वेद व्यासपुरी, मेरठ द्वारा आयोजित इस तीन दिवसीय कार्यक्रमों में प्रतिदिन यज्ञ, भजन एवं प्रवचन निरन्तर चलते रहे। कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज के प्रधान श्री तेजपाल सिंह तोमर, श्री ऋषिपाल आर्य (मंत्री), श्री राजन (कोषाध्यक्ष), चौ. अमन सिंह (संरक्षक), श्री जगत सिंह दौसा, श्री सुभाष लौहरी, डॉ० सत्यबन्धु, श्री सुन्दर सिंह राणा, श्री शिवम्, श्री प्रमोद सिंघल, श्री ए० के० अग्रवाल (रिटान जज) श्री राजेन्द्र दौसा, श्री एस० पी० यादव, श्री एन० पी० सिंह, श्री विक्रम सिंह तोमर, श्री मोनू घाट वाले, श्री सुमन लौहरी, सुशीला देवी, श्री उमेश दौसा, डॉ० अनिता, कविता आर्या, अनिता राजन, डॉ० बिन्दू वैश्य, श्री मन्यू चौधरी, श्री शिव कुमार आर्य, राजेश उपाध्याय आदि का विशेष सहयोग रहा।



छात्रवृत्ति वितरण समारोह मानव सेवा प्रतिष्ठान, आर्य ग्राम विकास समिति रठोड़ा (बागपत) तथा एन.ए.जे. चैरिटेबल ट्रस्ट मुंडका, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

छात्रवृत्ति वितरण समारोह मानव सेवा प्रतिष्ठान, आर्य ग्राम विकास समिति रठोड़ा (बागपत) तथा एन.ए.जे. चैरिटेबल ट्रस्ट मुंडका, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी के सहयोग से 26 अक्टूबर 2025 को दीनबन्धु चौधरी छोटूराम धर्मशाला, रामपुरा (दिल्ली) में भव्य रूप से आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या गुरुकुल, चोटिपुरा (अमरोहा, उत्तर प्रदेश) की छात्राओं द्वारा वैदिक मंगलाचरण और ईश्वर-भक्ति के भजनों के साथ हुआ, जिसने वातावरण को आध्यात्मिक और उत्साहपूर्ण बना दिया।

समारोह की अध्यक्षता अमेरिका से पधारे परोपकारी शिक्षाविद और समाजसेवी चौधरी रामस्वरूप जी आर्य एवं श्रीमती संतोष आर्या ने की। दीनबन्धु छोटूराम धर्मशाला की ओर से श्री चंगीराम जी, श्री रामकिशन फलस्वाल और श्री प्रियव्रत छिकारा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों का पुष्पमालाओं और स्मृति-चिह्नों से सम्मान किया।

मानव सेवा प्रतिष्ठान के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सोमदेव शास्त्री, उपप्रधान हरवीर सिंह शास्त्री, डॉ. कुलदीप आर्य, डॉ. अजय कुमार शास्त्री, श्रीमती कमलेश देवी, कोषाध्यक्ष उषा आर्या, श्रीमती शीला देवी एवं अन्य सदस्यों ने भी देश-विदेश से आए अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया।

संस्थापक एवं कार्यकर्ता प्रधान रामपाल शास्त्री ने उद्घाटन भाषण में मानव सेवा प्रतिष्ठान, नॉर्थ अमेरिकन जाट



चैरिटी और एन.ए.जे. चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना, उद्देश्यों और पारस्परिक सहयोग पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए प्रेरक उद्बोधन दिया।

महामंत्री डॉ. कंवर सिंह और डॉ. कुलदीप आर्य के संयुक्त संयोजन में विशिष्ट अतिथियों श्री कप्तान सिंह, डॉ. योगानन्द



शास्त्री, श्री ब्रह्मजीत सिंह, श्री सुरेश कुमार, श्री धर्मवीर सिंह और प्रिंसिपल मुनेश जीकृने प्रेरणादायक उद्बोधन प्रस्तुत किया और प्रतिभागियों को आशीर्वाद दिया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों के कर-कमलों से कुल 130 छात्र-छात्राओं को 30 लाख रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की गई। आर्य जगत के तपोनिष्ठ वीतराग संन्यासी एवं गुरुकुलों के संस्थापक-संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी द्वारा विभिन्न गुरुकुलों के 30 छात्र-छात्राओं को 5 लाख रुपये की छात्रवृत्ति वितरित की गई।

एन.ए.जे. चैरिटेबल ट्रस्ट मुंडका की ओर से डॉ. कंवर सिंह, डॉ. कुलदीप आर्य और सोमदेव शास्त्री द्वारा 10 छात्र-छात्राओं को 3 लाख रुपये की सहयोग राशि प्रदान की गई।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री रामस्वरूप आर्य ने सभी छात्र-छात्राओं, अभिभावकों एवं अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए युवाओं को शिक्षा और जीवन में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया। स्वामी प्रणवानन्द जी ने भी सभी उपस्थित जनों को आशीर्वाद प्रदान किया।

समस्त कार्यक्रम का संचालन और संयोजन डॉ. कंवर सिंह एवं डॉ. कुलदीप आर्य द्वारा अत्यंत सुचारु एवं सफल रूप से किया गया। कार्यक्रम में ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई जिसे सभी ने ग्रहण किया।

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलदू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)

सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतेक्यता होना अनिवार्य नहीं है।